उद्धि मा । घ १४

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) द्वितीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र १

(भक्ति-काव्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।

१. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं चार की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) गोकुल सबै गोपाल-उदासी।
जोग-अंग साधत जे ऊधो ते सब बसत ईसपुर कासी।।
यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपि रहति चरननि रसरासी।
अपनी सीतलताहि न छाँड़त यद्यपि है ससि रहु-गरासी।।
का अपराध जोग लिखि पठवत प्रेम भजन तजि करत उदासी।
सूरदास ऐसी को बिरहिन माँगति मुक्ति तजे गुनरासी।।

(ख) है कोई वैसीई अनुहारि।
मधुबन में इत अवत, सखि री ! चितौ तु नयन निहारि।।
माथे मुकुट, मनोहर कुण्डल, पीत बसन रुचिकारि।
रथ पर बैठि कहत सारथि सों ब्रज तन बाँह पसारि।।
जानति नाहिंन पहिचानति हौं मनु बीते जुग चारि।
सूरदास स्वामी के बिछरे जैसे मीन बिनु बारि।।

(ग) अलख अरूप अबरन सो कर्ता। वह सब सों, सब ओहि सों बर्त्ता।।
परगट गुपुत सो सरबबिंआयी। धरमी चीन्ह न चीन्है पापी।।
ना ओहि पूत न पिता न माता। ना ओहि कुटुंब न कोइ सँग नाता।।
जना न काहु, न कोई ओहि जना। जहँ लगि सब ताकर सिरजना।।
वै सब कीन्ह जहाँ लगि कोई। वह नहिं कीन्ह काहु कर होई।।
हुत पहिले अरु अस है सोई। पुनि सो रहै रहै नहिं कोई।।
और जो होइ सो बाउर अंधा। दिन दुइ चारि मरै करि धुंधा।।

(कृपया पन्ना उलटिए)

जो चाहा सो कीन्हेसि, करै जो चाहे कीन्ह।
बरजनहार न कोई, सबै चाहि जिउ दीन्ह।।

(घ) मंगल सगुन होहिं सब काहू। फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू।।
भरतहि सहित समाज उछाहू। मिलिहहिं राम मिटिह दुख दाहू।।
करत मनोरथ जस जियं जाके। जानि सनेह सुराँ सब छाके।।
सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं। बिहबल बचन प्रेम बस बोलहिं।।
रामसखा तेहि समय देखावा। सैल सिरोमनि सहज सुहावा।।
जासु समीप सरित पय तीरा। सीय समेत बसहिं दोउ बीरा।।
देखि करहिं सब दंड प्रनामा। कहि जय जानकि जीवन रामा।।
प्रेम मगन अस राज समाजू। जनु फिरि अवध चले रघुराजू।।
भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न शेषु।
कबिहिं अगम जिमि ब्रह्मसुख, अह मम मलिन जनेषु।।

(ङ) बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान।।

(च) नगर एक मूरतिपुर नाँऊ; राजा जीव रहा तेहि ठाऊँ।
का बरनौं वह नगर सुहावन; नगर सुहावन सब मन भावन।।
सब मन-भावन प्यारी-प्यारी; प्यारी-प्यारी मन-फुलवारी।
मन-फुलवारी चहुँ दिसि फूली; फूली फुलवारी तेहि भूली।।
भूली देखि उरबसी गौरी; गौरी भई प्रेम सों बौरी।
मूरतिपूर नगर आए जो; मूरति पूजनहार भए सो।।
इहै, सरीर सुहावन; मूरतिपूर।
इहै जीव राजा, जिव; जाहु न दूर।।

२. 'सूर में जितनी भावुकता एवं सहृदयता है, प्रायः उतनी ही वचन-विदग्धता एवं वाक्चातुर्य भी है।' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। १५

३. सूरदास की भक्तिभावना पर प्रकाश डालिए। १५

४. 'पदमावत' के 'स्तुतिखंड' की विशेषताएँ उद्घाटित कीजिए। १५

५. 'चित्रकूट प्रसंग' के आधार पर भरत का चरित्रचित्रण कीजिए। १५

६. 'रामचरितमानस' के महाकाव्यत्व पर प्रकाश डालिए। १५

७. 'अनुराग-बाँसुरी' की भावगत विशेषताएँ लिखिए। १५

८. जायसी के जीवनवृत्त पर प्रकाश डालिए। १५

उद्धि

मा । घ १५

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : द्वितीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र २

(रीतिकाव्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना :- प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. अग्रलिखित पद्यांशों में से किन्हीं चार की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए–४०

(क) यह कलिकाल बढ़्यौ दुरित कराल, देखि,
आई दुचिताई, सुचिताई सब लूट ही।
हम तपहीन जाइ तरैं कत दीन, तोसी
दूसरी नदी न, देखी फिरे चहूँ खूँट ही।।
सेनापति सिव-सिर संगिनी, तरंगिनी तू,
तोहि अचवत पचवत कालकूट हीं।
तजि कै अपाइ, तीर बसै सुख पाइ, गंगा!
कीजै सो उपाइ, तेरे पाइ ज्यौं न छूटहीं।।

(ख) कौन भाँति रहिहै बिरद अब देखबो मुरारि।
बीघे मोसों आनिकै गीधे गीधहि तारि।।
कौन सुनै कासों कहौं सुरति बिसारी नाह।
बदाबदी ज्यौं लेत हैं ये बदरा बदराह।।

(ग) कहति न देवर की कुबत कुलतिय कलह डराति।
पंजरगत मंजार ढिग सुक लौं सूकति जाति।।
कहलाने एकत बसत अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोवन सो कियौ दीरघ दाघ निदाघ।।

(घ) साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढ़ि,
सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत है।
'भूषन' भनत नाद विहद नगारन के,
नदी-नद मद गब्बरन के रलत है।।

(कृपया पन्ना उलटिए)

ऐल-फैल खैल-भैल खलक मैं गैल-गैल,
गजन की ठेल-पेल सैल उलसत है।
तारा सो तरनि धूरि धारा में लगत जिमि,
धारा पर पारा परावार यों हलत हैं।।

(ङ) अंग अंग छवि की लपट उपटति जाति अछेह।
खरी पातरीऊ तऊ लगै भरी सी देह।।
अजौं तरौना ही रह्यौ स्तुति सेवत इक अंग।
नाक बास बेसर लह्यौ बसि मुकतन के संग।।

२. वीर रस के आदि कवि भूषण की छत्रशाल-प्रशस्ति की सोदाहरण व्याख्या कीजिए। २०

३. सेनापति के गंगा महात्म्य को केन्द्र में रखकर विस्तृत विवेचना कीजिए। २०

४. बिहारी-वैभव के दोहों के आधार पर बिहारी की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए। २०

५. राम-रसायन के आधार पर सेनापति के काव्य साहित्य का सविस्तार विवेचन कीजिए। २०

६. महाराष्ट्र के वीर छत्रपति शिवाजी के व्यक्तित्व-कृतित्व को महाकवि भूषण की पंक्तियों से विभूषित कर सविस्तार व्याख्या कीजिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा : द्वितीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(हिन्दी भाषा का इतिहास और हिन्दी साहित्य का इतिहास)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

निर्देश–केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से दो प्रश्न करना अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अङ्क समान हैं।

खण्ड (क)

१. 'हिन्दी' शब्द का अभिप्राय बताते हुए हिन्दी भाषा के क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।

२. खड़ीबोली की विशेषताओं पर विद्वानों के मत लिखते हुए अपना मत प्रस्तुत कीजिए।

३. 'उर्दू हिन्दी की एक शैली है', इस मत के पक्ष अथवा विपक्ष में अपने मत प्रस्तुत कीजिए।

४. पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोलियों का परिचय दीजिए।

५. आदर्श लिपि के रूप में देवनागरी लिपि की विशेषताओं का प्रतिपादन कीजिए।

खण्ड (ख)

६. हिन्दी साहित्य के काल–विभाजन पर प्रकाश डालिए।

७. हिन्दी साहित्य के आदिकाल की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

८. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त साहित्य के साम्य और वैषम्य पर प्रकाश डालिए।

९. छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

१०. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) कृष्णाश्रयी शाखा। (ख) हिन्दी एकांकी।

(ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र। (घ) नवगीत।